"मालवा शैली के चित्रों में मानव रूपाकृतियों का विवेचन"

चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
से चित्रकला
में विद्या–वाचस्पति उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध–ग्रन्थ का सारांश

शोध निर्देशिका:

डॉ0 ज्योत्सना

एसोसिएट प्रोफेसर, चित्रकला विभाग

शोधार्थी:

वागीश कुमार भारद्वाज

एम0ए0 (चित्रकला)

शोध– केन्द्र

कनोहर लाल स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय,मेरठ

“मालवा शैली के चित्रों में मानव रूपाकृतियों का विवेचन”

अनुक्रमाणिका

प्राक्कथन :

प्रथम अध्याय : मालवा की भौगोलिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि।
पृ०सं० १-६२

द्वितीय अध्याय : मध्यकालीन चित्रकला पर क्षेत्रीय तत्त्वों का प्रभाव।
पृ०सं० ६३-१००

तृतीय अध्याय : मालवा शैली के चित्रों में विभिन्न विषय-वस्तु के आधार पर अंकन।
पृ०सं० १०१-१२५

चतुर्थ अध्याय : मालवा शैली के चित्रों में स्त्री एवं पुरूष आकृतियों का अंकन।
पृ०सं० १२६-१५०

पंचम अध्याय : मालवा शैली के चित्रों में मानव आकृतियों की वेशभूषा।
पृ०सं०१५१-१८०

षष्टम अध्याय : मालवा शैली के लघु चित्रों में प्रयुक्त विभिन्न कला-तत्त्व
(रूप, रेखा, रंग-योजना, परिप्रेक्ष्य, अन्तराल, सामग्री)।
पृ०सं० १८१-२०२

उपसंहार : पृ०सं० २०३-२०७

परिशिष्ट : सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची
चित्र-सूची पृ०सं० २०८-२२१
चित्र-संग्रह।

Jyoti

गरिमा

शोध-प्रबन्ध सांराश

कला का सदैव से एक ही ध्येय रहा है-मानव जीवन को पोषित एवं सुसंस्कृत करना। कला एक सुदीर्घ काल-रेखा सी हमारे अन्तर्मन और समाज की तहों में बिखरी हुई है। कितनी ही धूमिल पगडंडियाँ, कितनी संकरी गलियाँ, कितने छायादार रास्ते आदिम काल से बहते हुए मालवा कलम तक आकर रूके हैं। देश, काल, वातावरण, परम्परा और तकनीक की दृष्टि से जीवन के प्रत्येक पहलू को स्पर्श करती हुई मालवा कलम ने भारतीय संस्कृति को संजोए रखने में सदैव अपनी भूमिका के साथ न्याय किया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध **"मालवा शैली के चित्रों में मानव रूपाकृतियों का विवेचन"** के अन्तर्गत मालवा कलम के चित्रों सम्बन्धी विषय-वस्तु का वर्णन मात्र न होकर इस शैली के चित्रों को प्राचीन एवं नवीन सिद्धान्तों के आधार पर, यहाँ की कलागत-विधियों एवं कला-धरोहरों को बड़ी गहराई से तोलने का प्रयास किया गया है।

मालवा कलम की कलात्मक धरोहर का परिमाण अत्यधिक है, उसका क्षेत्र-विस्तार व्यापक है, उसका स्वरूप विविध और गहन है और साधना के प्रत्येक चरण पर केवल कुछ क्षेत्रों विशेष में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारत की कला-साधना और संस्कृति से अन्दर की साँसों का सम्बन्ध है। ऐसी कला-सम्पत्ति की विशेषताओं-विशिष्टताओं के तथ्यपरक उद्‌घाटन का प्रयत्न इस शोध-प्रबन्ध के माध्यम से किया गया है।

शोध-प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में मालवा कलम के भौगोलिक, सामाजिक और धार्मिक स्वरूप का विस्तृत एवं प्रामाणिक अध्ययन किया गया है। यहाँ के भौगोलिक परिवेश एवं उसके प्रभावों के साथ यहाँ की प्राकृतिक सम्पदाओं और उनसे प्राप्त होने वाली कला-प्रेरणाओं की समीक्षा की गई है।

द्वितीय अध्याय में मध्यकालीन चित्रकला पर क्षेत्रीय तत्वों के प्रभाव का वर्णन किया गया है। समस्त स्थानों को क्रमानुसार सरल रूप में प्रस्तुत किया गया है। साथ ही चित्रों का काल-विभाजन और चित्रण की परम्पराओं का भी संक्षिप्त उल्लेख किया गया है।

तृतीय अध्याय में मालवा चित्रशैली में विभिन्न विषयवस्तु के आधार पर अंकित चित्रों का वर्णन किया गया है। उल्लेखित स्थानों पर प्राप्त लघु चित्र यहाँ के सांस्कृतिक क्षितिज के अभिज्ञान के महत्वपूर्ण घटक हैं। विषय-वस्तु की दृष्टि से मालवा क्षेत्र की कला अपना व्यापाक रूप रखती है। तत्कालीन समाज का शायद ही ऐसा कोई भी विषय रहा हो, जो मालवा चित्रकारों की तूलिका से अछूता रहा है। साहित्य हो या समाज, संस्कृति हो या धर्म मालवा के चित्रकारों ने सभी विषयों को कला के माध्यम से अपनी कृतियों में सदैव के लिए अंकित

नागीरा

कर उन्हें कालजयी बना दिया। अन्य भारतीय कला शैलियों की भाँति मालवा कलाकरों ने भी सहज सुलभ प्राविधियों के प्रयोग से क्षेत्र की भावनाओं को अभिव्यक्ति कर चाक्षुष रूप प्रदान किया है। मालवा शैली के चित्रों की मुख्य विषय-वस्तु रागमाला, कृष्ण-लीला पर आधारित ग्रन्थ, जयदेव विरचित गीतगोविन्द, भागवत-पुराण, केशवदास कृत रसिकप्रिया, आदि मुख्य हैं। साथ ही रामायण, देवी माहात्मय, चौर पंचाशिका, लौरचन्दा एवं रूक्मिणी-हरण रहा है।

चतुर्थ अध्याय में मालवा शैली के चित्रों में स्त्री एवं पुरूष आकृतियों के आधार पर अभिव्यजिंत विभिन्न स्वरूपों को संक्षिप्त रूप से स्पष्ट किया गया है। मालवा शैली के चित्रकारों ने मानव आकृतियों के द्वारा उनकी अन्तःचेतना तथा स्वाभावगत विशेषताओं की सम्यक व्याख्या प्रस्तुत करने का अपूर्व उत्साह दिखाया गया है। यहाँ के चित्रों में तत्कालीन राजाओं तथा उदार व्यक्तित्व के स्त्री-पुरूषों तथा धार्मिक देवी-देवताओं का रूप सौन्दर्य स्थापित किया गया हैं।

पुरूषाकृतियों में गर्वीला स्वभाव तथा नारी आकृतियों में कोमलता के साथ-साथ लज्जाशीलता का आभास सर्वत्र व्यक्ति दिखाई देता है। श्रीराम विषयक चित्रों में राम के संयोग तथा वियोग पक्षों को प्रदर्शित किया गया है। विष्णु जी के दस अवतारों को मालवा के चित्रकारों ने बखूबी प्रकट किया है। मालवा क्षेत्र निर्मित चित्रों के अन्तर्गत नारी आकृतियों में लज्जाशीलता के साथ-साथ चेहरे पर तनिक उदासीनता का प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है। यहाँ की स्त्री-पुरूष आकृतियाँ छरहरे शरीर वाली बनाई गई है।

पंचम अध्याय में मालवा कलम के चित्रों में अंकित विभिन्न आकृतियों में वेशभूषा एवं उपयोग की गई वर्ण-योजना का सूक्ष्मता से अध्ययन किया गया है। इन चित्रों में जहाँ शैलीगत शास्त्रीयता हैं, वहीं विषयों के प्रस्तुतीकरण व प्रयोगों में नवीनता हैं। वह नवीनता जो युगों तक आधुनिकता व प्रयोगात्मकता का मानक बन सकें। कलात्मक गुण, आकारों का सरलीकरण, रंगों का स्वाभाविक निर्मल, सौन्दर्य, प्रतीकात्मकता प्रभावपूर्ण संयोजन आदि तत्व यहाँ की कला में प्रचुर मात्रा में है।

षष्ठम् अध्याय में मालवा कलम के चित्र-तत्वों, विशेषताओं व तकनीकों का संक्षिप्त एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। मालवा चित्रशैली की कृतियों के माध्यम से यहाँ के चित्रकारों ने मानवीय संवेदनाओं को रंगों और रेखाओं के माध्यम से सुरुचिपूर्ण ढंग से अभिव्यक्त किया है। अपने नीति रेखांकन एवं रंगों की उज्जवलता के अतिरिक्त जन-जीवन के साधारण एवं सरल प्रस्तुतीकरण के कारण मालवा चित्र शैली अद्वितीय है। अन्त में, उपसंहार के रूप मालवा कलम के चित्रों का तत्कालीन समाज, कला एवं संस्कृति के साथ-साथ आधुनिक भारतीय चित्रकला के विकास में उनके योगदान की भूमिका एवं महत्व को दर्शाने का प्रयत्न किया गया

वागीश

है। उपसंहार के निष्कर्षस्वरूप यह तथ्य उद्‌घाटित हुआ है कि मालवा कलम की कला-साधना की प्रतिध्वनियाँ आध्यात्मिक-धार्मिक भावावेग से आन्दोलित होकर ब्रह्म-साधना के लिए मुखरित हुई है।

आशा है कि शोध-प्रबन्ध सामान्य पाठकों से लेकर कला-शोधार्थियों तक, सभी के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

वागीश कुमार भारद्वाज
शोधकर्त्ता
कनोहर लाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
मेरठ।